गायत्री मंत्र के नः अक्षर की व्याख्या

सावधानी और सुरक्षा

श्रीराम शर्मा आचार्य

सावधानी और सुरक्षा

गायत्री मंत्र का बीसवाँ अक्षर 'नः' सदैव सावधानी रखने और अपनी रक्षा की उचित व्यवस्था करने की शिक्षा देता है–

नः श्रृण्वेकामिमां वार्ता जागृतस्त्वं सदाभव ।
स्वपमाणं नरं नूनं ह्याक्रामन्ति विपक्षिणः ।।

अर्थात्–"इस शिक्षा को ध्यानपूर्वक सुनो कि "सदा सावधान रहना चाहिए । असावधान मनुष्य पर ही शत्रुगण प्रायः आक्रमण कर देते हैं ।"

असावधानी, आलस्य, बेखबरी, अदूरदर्शिता ऐसी भूले हैं जिन्हें अनेक प्रकार की आपत्तियों का उद्गम स्थल कह सकते हैं । गफलत में रहने वाले पर किसी भी तरफ से हमला हो सकता है । असावधानी में एक ऐसा दूषित तत्व पाया जाता है कि उसके फल से अनेक प्रकार की हानियाँ एवं विपत्तियाँ एकत्रित हो जाती हैं ।

असावधान, आलसी मनुष्य एक प्रकार का अर्धमृत है । मरी हुई लाश को पड़ी हुई देखकर जैसे चली, कौए, कुत्ते, सियार गिद्ध आदि दूर–दूर से दौड़ कर जमा हो जाते हैं, वैसे ही असावधान मनुष्य के ऊपर आक्रमण करने वाले तत्व कहीं न कहीं से आकर घात लगाते हैं ।

जो स्वास्थ्य–रक्षा के लिए जागरूक नहीं है, उसे देर–सबेर में बीमारियाँ आ दबोचेंगी । जो नित्य आने वाले उतार–चढ़ावों से बेखबर रहता है, वह किसी दिन दिवालिया बन कर रहेगा । जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर सरीखे मानसिक शत्रुओं की गतिविधियों की ओर से आँखें बन्द किए रहता है, वह कुविचारों और कुकर्मों के गर्त में गिरे बिना न रहेगा । जो दुनियाँ के छल, फरेब, ठगी, लूट, अन्याय, स्वार्थपरता, शैतानी आदि की ओर से सावधान नहीं रहता उसे उल्लू बनाने वाले, ठगने वाले, सताने वाले अनेकों पैदा हो जाते हैं । जो जागरूक नहीं, जो अपनी रक्षा के लिए प्रयत्नशील नहीं रहता, उसे दुनियाँ के शैतानी तत्व बुरी तरह नोंच खाते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसलिए अन्य सद्गुणों और हितकारी शक्तियों के साथ मनुष्य में सावधानता का गुण रहना भी अत्यावश्यक है । विवेकपूर्वक त्याग करना और उदारता से परोपकार करना तो उचित है, पर अपनी बेबकूफी अथवा असावधानी से दुष्ट लोगों का शिकार बनना सर्वथा अवांछनीय और पापमूलक है । जहाँ इच्छाओं की ओर प्रयत्न करना आवश्यक है, वहाँ बुराई से सावधान रहने, बचने और उनसे संघर्ष करने की भी आवश्यकता है ।

जागरूकता का महत्व

मनुष्य का जीवनकाल दो प्रकार से कटता है (१) जागते हुए (२) सोते हुए । आमतौर से लोग दिन में जागते हैं और रात को सोते हैं । सोना जरूरी भी है क्योंकि बिना उसके शारीरिक और मानसिक थकान नहीं मिटती । दिन भर काम करने से जो शक्तियाँ व्यय होती हैं उनकी क्षति की पूर्ति के लिए निद्रा की आवश्यकता होती है । रात भर सोकर जब मनुष्य प्रातःकाल उठता है तो उसमें स्फूर्ति और ताजगी होती है । काम करने की नई क्षमता उसमें आ जाती है । यदि दो चार दिन भी लगातार न सोया जाय तो इतनी थकान हो जायगी कि जीवन यात्रा का चलना तक दुर्लभ दिखाई देगा ।

जिस प्रकार सोना जरूरी है उसी प्रकार जागना भी जरूरी है । क्योंकि जितने भी काम होते हैं जागृत अवस्था में होते हैं । निर्वाह और विकास की समस्त कार्य प्रणाली जागृत अवस्था में ही चलती है । यदि निद्रा ही प्रधान रूप धारण कर ले और जागरण कम हो जाय तो भी जीवन में विकट संकट उत्पन्न हो जाता है । जिस प्रकार गहरी निद्रा में सोने से थकान पूरी तरह से मिट जाती है और नई प्रफुल्लता पैदा होती है, उसी प्रकार पूरी तरह जागृत रहने से जागृत जीवन की कार्यप्रणाली सुचारु रूप से चलती है ।

कितने ही मनुष्य ऐसे हैं जो जागृत अवस्था में भी सोते रहते हैं । उनके मस्तिष्क का एक अंश जागृत रहता है और शेष भाग सोता रहता है । इस अर्द्ध-मूर्च्छित अवस्था में रहने वाला मनुष्य एक प्रकार से लुञ्ज हो जाता है । उसकी दशा करीब-करीब अर्द्धविक्षिप्त की-सी, भुलक्कड़ बालक की-सी एवं अपाहिज की-सी हो जाती है । यह 'जागृत तंद्रा' का रोग ऐसी भयंकरता से फैला हुआ है कि आजकल अधिकांश मनुष्य इसके शिकार मिलते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, पाठक अविश्वास न करें । सचमुच ही यह रोग बड़े भयंकर रूप से फैला हुआ है और अधिकांश जन समूह इससे ग्रसित हो रहा है । इस रोग का रोगी देखने में अच्छा–भला, तन्दुरुस्त, हट्टा–कट्टा और भलाचंगा मालूम पड़ता है, शारीरिक दृष्टि से इसकी तन्दुरुस्ती में कोई फर्क नहीं मालूम पड़ता फिर भी 'जागृत तन्द्रा' के कारण उसके जीवन का सारा विकास रुका हुआ होता है । उसकी सारी प्रतिष्ठा एवं साख नष्ट हो जाती है और जिम्मेदारी के साथ होने वाले सभी महत्वपूर्ण कार्यों से वह वंचित रह जाता है ।

जागृम तन्द्रा के तीन दर्जे हैं । उन तीनों के प्रथक नाम भी हैं– (१) लापरवाही (२) आलस्य (३) प्रमाद । तीनों ही दर्जे क्रमशः अधिक भयंकर एवं घातक हैं । कहने और सुनने में यह तीनों बहुत ही मामूली बातें प्रतीत होती हैं क्योंकि अधिकांश लोग इनसे ग्रसित होते हैं पर 'अधिकांश लोग किसी विशेष बात से ग्रसित होते हैं ।" इसीलिए उनकी भयंकरता कम नहीं हो जाती । अधिकांश लोग झूठ बोलते हैं, नशा करते हैं, संयम से रहित होते हैं, कोष्ठबद्ध या प्रमेह आदि रोगों से ग्रसित होते हैं, पर इससे मिथ्या भाषण, असंयम, नशेबाजी, कब्ज या प्रमेह की भयंकरता कम नहीं होती, यह घातक तत्व जहाँ रहते हैं वहाँ भयंकर परिणाम उत्पन्न किए बिना नहीं रहते ।

यह सुनिश्चित तथ्य है कि जिस कार्य को मनुष्य पूरी दिलचस्पी से, जागृत मन से, ध्यानपूर्वक करेगा वह कार्य ठीक, निर्दोष और सुन्दर होगा । इस जागृति एवं दिलचस्पी की जितनी कमी होगी उतना ही फूहड़ रह जायगा और भूलें होंगी । घोड़ा जितना तेज चलता है उतनी ही तेजी से ताँगे का पहिया घूमता है । पहिया स्वतंत्र रूप से नहीं चलता उसकी गति घोड़े की चाल के ऊपर निर्भर है । घोड़ा मन्द या तीव्र जैसी चाल से चलता है उसी गति से ताँगे का पहिया घूमने लगता है । मन की जिस कार्य में जितनी रुचि होगी वह उतना ही अच्छा बन पड़ेगा । यदि घोड़ा ऐब ले आवेगा तो ताँगे की चाल रुक जायगी, यात्रा देर में पूरी होगी, बैठने वालों को कष्ट होगा और हर घड़ी खतरा बना रहेगा । यही हाल दिलचस्पी की कमी के साथ किए जाने वाले कामों का होता है, वे भी अनेक प्रकार के दोषों से भरे हुए होते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रिया पद्धति के साथ पूरी दिलचस्पी को न जोड़ना जागृत तन्द्रा का प्रमुख चिन्ह है । इस अवस्था में किए हुए कार्यों का ठीक प्रकार पूरा होना असंभव है । जिस वक्त कोई व्यक्ति झपकियाँ ले रहा हो उस समय उसे एक रेखागणित का प्रश्न हल करने को दिया जाय तो वह उसे सही रूप से हल न कर सकेगा । इसी प्रकार जो आधे मन से, अर्द्धजागृत अवस्था में कार्य करता है वह अपने सामने रखे हुए कार्यों को भली प्रकार पूरा न कर सकेगा । इस प्रकार की अधूरे मन के साथ की हुई कार्य-प्रणाली को लापरवाही, असावधानी, आलस्य एवं प्रमाद कहा जाता है ।

हर काम को सफल बनाने के लिए दो बातों का ध्यान रखना पड़ता है । एक यह कि "इस कार्य को उत्तमता के साथ पूरा किया जाय", दूसरा यह कि-"कहीं यह कार्य खराब न हो जाय ।" सफलता का लोभ और असफलता का भय-इन दोनों वृत्तियों का समन्वय ही जागरूकता है । जैसे गरम (पोजेटिव) और ठण्डे (नेगेटिव) तारों के मिलने से बिजली की धारा का संचार होता है, वैसे ही उपरोक्त लोभ और भय का ध्यान रखने से मानसिक जागरूकता उत्पन्न होती है । यह जागरूकता सतेज होकर शरीर और मस्तिष्क की काम करने वाली शक्तियों को संगठित और संयोजित करके सुव्यवस्थित रूप से कार्य में प्रवृत्त करती है, तब वह कार्य सफल हो जाता है ।

परन्तु जब मनुष्य असफलता की लज्जा को भूल जाता है, सफलता के गौरव की उपेक्षा करता है, तब उस जागरूकता-विद्युत शक्ति का संचार नहीं होता । नाड़ियाँ शिथिल पड़ जाती हैं । कार्यकारिणी शक्ति मन्द हो जाती है । सामने पड़ा हुआ काम पर्वत के समान भारी प्रतीत होता है । उसे करते हुए मन में स्फूर्ति नहीं उठती वरन् बेगार के भार की तरह झुँझलाते हुए उसे पूरा किया जाता है । जब उस कार्य में रस नहीं आता तो उसके बिगाड़-सुधार की बारीकियों की ओर मन नहीं जाता । फलस्वरूप कार्य-काल में वे बातें सूझ नहीं पड़तीं कि कहाँ बिगाड़ करने वाली भूल हो रही है और क्या सुधार करने वाली गतिविधि छूटी जा रही है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लापरवाही की हानिकारक आदत

जागरूकता का अभाव ही असावधानी या लापरवाही कहा जाता है । ऐसे स्वभाव के आदमी में दो प्रकार के दोष और आ जाते हैं, वह है–(१) आगे–पीछे के कार्यक्रम की परवाह नहीं करना (२) अपने उत्तरदायित्व को अनुभव नहीं करना । जहाँ पहुँच गये बस वहाँ की बातों में उलझ गये । ताश खेल रहे हैं तो ताश में मशगूल हैं–कारखाने में मजदूरों द्वारा क्या नफा–नुकसान हो रहा होगा इसका ध्यान ही नहीं । जरूरी काम को छोड़कर दस मिनट के लिए किसी से मिलने गये हैं, तो वह जरूरी काम जहाँ का तहाँ पड़ा हुआ है और दस मिनट की जगह एक घण्टे निरर्थक गप्प हाँकने में लगा दिये । लौट कर देखते हैं कि बहुत काम हर्ज हुआ । उस वक्त कुछ अफसोस भी करते हैं पर फिर वही रफ्तार । दूसरे दिन फिर वैसी ही लापरवाही । किसी रिश्तेदार या दोस्ती में दो रोज के लिए जावें तो दस रोज में लौटें । नियत समय पर उनका कोई भी काम नहीं हो पाता । स्नान, भोजन, सोना, जागना कुछ भी उनका समय पर नहीं होता । जीविका उपार्जन का जो व्यवसाय है वह भी ऐसा ही खंड–बंड हो जाता है । दुकान पर कभी बैठते हैं, कभी नहीं बैठते, कोई सामान है, कोई बीता हुआ पड़ा है । निराश ग्राहक लौट जाते हैं । अगर कहीं नौकरी करते हैं तो देर में पहुँचते हैं, समय पर ठीक तरह काम पूरा करके नहीं देते, ऐसी दशा में असन्तुष्ट मालिक की झिड़कियाँ सुनने को मिलती हैं । ऐसी दशा में जीविका के जो साधन हैं उनसे बहुत थोड़ी आमदनी हो पाती है । न तो निराश लौटने वाले ग्राहकों को अधिक नफा मिल सकता है और न असन्तुष्ट मालिक वेतन बढ़ा सकता है । फल यह होता है कि लापरवाह व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति गिरने लगती है और धीरे–धीरे वे दरिद्र बन जाते हैं ।

लापरवाह व्यक्तियों से अपने वचन का पालन नहीं हो सकता । क्योंकि हर एक वचन को पूरा करने के लिए वह समय ध्यान रखना पड़ता है जबकि उसे पूरा करना है, साथ ही वह सामग्री भी जुटानी पड़ती है, जो वचन पूरा करने के लिए प्रस्तुत की जाने वाली है । लापरवाह मनुष्य पहले तो सोचता रहता है कि अभी क्या जल्दी है बहुत समय पड़ा हुआ है, इस काम को तो बहुत जल्द पूरा कर देंगे, ऐसे ही टालते–टालते समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीतता चला जाता है और जब वचन पूरा करने की अवधि बिलकुल पास आ जाती है और तब उसके हाथ पैर फूल जाते हैं कि अब यह कार्य कैसे पूरा हो । अन्त में दाँत निपोर कर रह जाते हैं ।

जिनमें जागरूकता नहीं है उनकी सारी चीजें अस्त-व्यस्त रहती हैं । उनके निवास स्थान पर जाकर देखिये तो सारी चीजें इधर-उधर अस्त-व्यस्त कूड़े-कचरे की तरह जहाँ-तहाँ पड़ी होंगी । चूहे, दीमक, मकड़ी, छिपकली, कीड़े-मकोड़े उनकी चीजों का निर्द्वन्द उपयोग कर रहे होंगे । बालों में चीलर, कपड़ों में जुएँ रेंग रहे होंगे । शरीर पर जहाँ-तहाँ मैल-जम रहा होगा, बदबू आ रही होगी, देह पर कपड़े बेढंगे भद्दे और मैले-कुचैले होंगे । कहीं हजामत बढ़ रही तो कहीं बटन टूटे हुए हैं । जूते की सिलाई उखड़ गई है तो यह न बन पड़ेगा कि जल्दी ही उसकी मरम्मत करा लें, भले ही वह कीमती जूता थोड़े ही दिनों में इस छोटी-सी भूल के कारण खराब हो जाय । इस प्रकार टूटी-फूटी, अस्त-व्यस्त, मैली-कुचैली दशा में उनकी वस्तुएँ पड़ी रहती हैं, यदि कोई दूसरा व्यवस्था करने वाला न हो तो उनके चारों ओर दरिद्र महाराज छाये हुए दृष्टिगोचर होते हैं ।

ऐसे लोग दूसरों के यहाँ अपनी चीजें पड़ी रहने देते हैं, अपने यहाँ किसी की चीज आ जाय तो लौटाते नहीं । यदि भाग्यवश खोने या नष्ट करने से बच गई तो बार-बार तकाजे होने पर टूटी-फूटी या खराब दशा में वापस करते हैं । जो एक बार चीज उधार दे देता है वह आगे के लिए होशियार हो जाता है और फिर उन्हें देने की भूल नहीं करता । आये दिन उनकी चीजें गुम होती रहती हैं-अपने बुरे स्वभाव के कारण चीजों को यहाँ-तहाँ पटक देते हैं फिर जरूरत के वक्त बेतहाशा इधर-उधर ढूँढ़ते फिरते रहते हैं, नहीं मिलती तो कभी किसी पर चिल्लाते हैं कभी किसी पर नाराज होते हैं । घर में चीज निबट गई हैं, पर लाई नहीं जातीं । ईंधन, अनाज, नमक, तेल आदि की पुकार पड़ी रहती है ।

लापरवाही का बड़ा भाई आलस्य है । मानसिक असावधानी को लापरवाही कहते हैं । इसमें जब बढ़ोत्तरी होती है तो वह शरीर पर भी अपना कब्जा कर लेती है और परिश्रम करना बहुत बुरा लगने लगता है । छोटा या बड़ा कोई भी परिश्रम क्यों न हो जहाँ तक बन पड़ता है उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टालते हैं । जब तक अत्यन्त उग्र प्रेरणा न हो तब तक मेहनत करने को देह नहीं उठती । अपना काम दूसरों से कराने के अवसर ताका करते हैं । शरीर को उठा कर इधर–उधर ले जाना ऐसा लगता है मानो पहाड़ उठाने का काम करना पड़ रहा हो । पलंग, आराम कुर्सी या गद्दी पर पड़े रहना उन्हें पसन्द होता हे । घर छोड़कर बाहर निकलना ऐसा प्रतीत होता है मानो मौत से युद्ध करने की मुसीबत उनके ऊपर आई हो । समय को वे निरर्थक गँवाते रहते हैं और हर काम को नियत अवधि से पीछे करते हैं । कई बार तो रेल आदि के टाइम से भी पिछड़ जाते हैं । शौच, स्नान, भोजन, शयन में भी उनका आलस्य साथ नहीं छोड़ता । नियत और उपयोगी समय पर उनका एक भी कार्य नहीं हो पाता, आलस्य में उनके जीवन–क्षण निरर्थक बरबाद होते रहते हैं ।

प्रमाद इन दोनों से भी आगे बढ़ी हुई स्थिति है । जानबूझ कर, अधिक उपयोगी एवं आवश्यक कार्यों की धृष्टतापूर्वक उपेक्षा करना, उन्हें बिगड़ने देना प्रमाद कहलाता है । आलसी या लापरवाह व्यक्ति अपनी भूल के लिए कुछ पश्चात्ताप करता है । अन्यमनस्कता के कारण भूल करते समय उसे सूझ नहीं पड़ता कि इससे क्या अनर्थ होने की संभावना है । वह वस्तुस्थिति के दुष्परिणाम ठीक–ठीक अन्दाज नहीं लगा पाता और साधारण बात समझ कर नियत कार्य में ढील छोड़ देता है । किन्तु प्रमादी व्यक्ति बौद्धिक दृष्टि से उन सब बातों को जानता है, उसे अन्दाज होता है कि इस प्रकार की लापरवाही करने का क्या दुष्परिणाम हो सकता है ? फिर भी अपनी हेकड़ी के आधार पर उसकी परवाह नहीं करता । अहंकार, धृष्टता और निर्लज्जता की उसमें प्रधानता रहती है । वह घमण्ड के मारे दूसरों की हानि या घृणा की चिन्ता नहीं करता, औरों को तुच्छ या नाचीज समझता है, कर्तव्यपालन न करने पर जो भर्त्सना होती है, उससे शर्मिन्दा होने के स्थान पर वह धृष्टतापूर्वक बेतुके जबाव देता है । अपनी भूल का निराकरण या सुधार करने के स्थान पर वह भर्त्सना करने वाले के दोष दिखाने लगता है । वह सावित करना चाहता है कि मैंने यह गलती की, तो तुम अमुक गलती कर चुके हो, फिर तुम्हें मेरी आलोचना क्यों करनी चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोष 'जागृत तन्द्रा' के कारण पैदा होते हैं । यह साधारण दृष्टि से देखने पर बहुत छोटे मालूम पड़ते हैं, इनसे किसी भयंकर अनर्थ की आशंका नहीं मालूम पड़ती, इसलिए अधिक ध्यान नहीं दिया जाता, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि 'छोटी-छोटी' आदतों से ही जीवन निर्माण होता है ।' छोटे-छोटे परमाणुओं के संघटन से कोई बड़ी वस्तु बनती है । पीले और नीले रंग के नन्हें-नन्हें परमाणु अमुक मात्रा में न्यूनाधिक रहें तो दूसरे प्रकार का रंग बनेगा । दवाओं में पड़ने वाली औषधियों में थोड़ा अन्तर कर दिया जाय तो उनके गुणों में भी भारी अन्तर आ जाता है । निशाना लगाते समय यदि बन्दूक की नाल एक जौ भर नीची हो जाय तो निशाने तक गोली के पहुँचने में कई गज का अन्तर पड़ जाता है । इसी प्रकार छोटे-छोटे गुण और दोषों का अन्तर जीवन की अन्तिम सफलता में फर्क कर देता है ।

असावधानी का प्रतिकार

जागृत तन्द्रा में विभोर मनुष्य वास्तव में आधा मनुष्य है । अर्द्ध जीवित और अर्द्धमृतक भी उसे कह सकते हैं । जैसे शरीर के एक भाग को लकवा मार जाय और दूसरा भाग अच्छा रहे तो उससे क्या काम हो सकेगा ? किसी आदमी का एक हाथ, एक पैर, एक कान, एक आँख नष्ट हो जाय तो उस बेचारे की बड़ी दुर्दशा होगी । इसी प्रकार जो अर्द्धतन्द्रा में पड़ा रहता है वह अधूरा मनुष्य जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने वाला योद्धा नहीं बन सकता । लापरवाही एक मानसिक लकवा है, जिससे आधा मस्तिष्क लुञ्ज-पुञ्ज हो जाता है । ऐसे मानसिक अपाहिज दरिद्रता के चिथड़े में लिपटे एक कोने में पड़े रहते हैं और जीवन के भार को किसी प्रकार गिरते-मरते ढोते रहते हैं । उन्नत, समृद्ध एवं सम्पन्न जीवन तो उनके लिए आकाश कुसुम की भाँति दुर्लभ है ।

जीवन को धूलि में मिला देने वाला यह सत्यानाशी रोग जितना भयंकर और घातक है, उतना ही चिकित्सा में सुलभ भी है । ज्वर, खाँसी, दस्त आदि रोग ऐसे हैं कि उनको दूर करने में किसी जानकार चिकित्सक से सलाह लेने की और अमुक औषधियाँ खरीदने और सेवन करने की आवश्यकता पड़ती है । कई तरह के उपचार करने पड़ते हैं तब कहीं कुछ समय लेकर वे रोग नष्ट होते हैं, परन्तु इस रोग के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निवारण करने में इस प्रकार का एक भी झंझट नहीं है । रोगी जब चाहे कि मुझे इस रोग से पीछा छुड़ाना है, उसी समय वह उससे छुटकारा पा सकता है । यह रोग तभी तक ठहरता है जब तक रोगी उसका विरोध नहीं करता और अपने में उसे ठहरने देता है, पर जब वह विरोध करने और हटा देने को उतारू हो जाता है तो फिर उसका ठहरना नहीं हो सकता ।

व्यभिचार दूसरे पक्ष के सहयोग पर निर्भर है । यदि पुरुष व्यभिचारी हो पर कोई स्त्री उसके कार्य में सहयोग न दे तो व्यभिचार होना असंभव है । इसी प्रकार जागृत तन्द्रा का घातक रोग भी रोगी के सहयोग पर निर्भर है । जहाँ विरोध होगा, हटाने का प्रयत्न होगा, वहाँ उसका ठहरना नहीं हो सकता । यह रोग किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध अपना शिकार नहीं बना सकता । जैसे ही मनुष्य यह सोचता है कि मुझे अपने को जागृत तन्द्रा के चंगुल से छुड़ाना है वैसे ही उस बीमारी के पाँव उखड़ जाते हैं । जैसे ही वह यह दृढ़ संकल्प करता है कि "मैं जागरूक रहूँगा–लापरवाही को पास भी न फटकने दूँगा" वैसे ही वह अपना बोरिया–बिस्तर समेट लेती है । कहते हैं कि चोर के पैर बड़े कमजोर होते हैं । घर का मालिक चाहे वह कमजोर ही क्यों न हो जाग पड़े और सावधान हो जाय तो घर में घुसे हुए हट्टे–कट्टे पहलवान चोर को भी भागना पड़ता है । मन के सजग हो जाने पर लापरवाही भी चोर की तरह भाग खड़ी होती है ।

अन्धकार क्या है ? प्रकाश के अभाव का नाम ही अन्धकार है, वैसे स्वतंत्र रूप से अन्धकार का कोई अस्तित्व नहीं । अन्धकार नाम का पदार्थ स्वतंत्र रूप से कहीं उपलब्ध नहीं किया जा सकता । इसी प्रकार लापरवाही भी स्वतंत्र चीज नहीं है । जागरूकता का अभाव ही लापरवाही है । जैसे स्नान करना या न करना, टहलने जाना या न जाना, अपने हाथ की बात है, उसी प्रकार मन का जागरूक रखना या न रखना भी अपने हाथ की बात है । अपनी इच्छा के ऊपर यह सब निर्भर है । मन की इच्छा होती है तो उसकी आज्ञानुसार हाथ अपना काम करना शुरू कर देता है और जब तक इच्छा रहती है वह काम में जुटा रहता है । मन की इच्छा न हो तो हाथ के हिलने–डुलने से कुछ प्रयोजन नहीं । मस्तिष्क की भी यही दशा है । मनुष्य चाहता है कि सावधानी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एकाग्रता और दिलचस्पी से काम करूँ तो उसकी इस चाहना के मार्ग में कोई बाधा नहीं । खुशी-खुशी मस्तिष्क उसी प्रणाली को अपना लेता है जिसको कि मन चाहता है । जिस काम में अधिक रुचि होती है, उस काम को लापरवाह व्यक्ति भी बड़ी सावधानी से पूरा करते हैं । जैसे शतरंज, चौपड़ या ताश खेलने में जिसकी रुचि होती है, वह उस खेल को बड़ी सावधानी से और सफलता के साथ खेलता है । उस खेल में बहुत कम भूलें उससे होती हैं, परन्तु वही व्यक्ति जब दूसरे काम करता है तो भूल पर भूल होने लगती हैं । इससे सिद्ध है कि मन की ढील या उदासीनता ही लापरवाही का मूल कारण है । जबकि लापरवाह, आलसी और प्रमादी व्यक्ति किसी अपनी दिलचस्पी के एक काम में अपना कौशल प्रकट कर सकते हैं, तो कोई कारण नहीं कि वे अन्य कार्यों में कौशल प्रकट न कर सकें । बाधा केवल एक ही है, वह है-मन की उदासीनता । इस बाधा को हटा दिया जाय तो हर एक व्यक्ति पूर्ण रूप से क्रिया-कुशल, कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी, कर्मपरायण और सफल मनोरथ हो सकता है । उसके कार्यों में जो त्रुटियाँ, कुरूपताएँ, फूहड़पन तथा गैरजिम्मेदारी भरी रहती हैं, उन सबका दर्शन भी दुर्लभ हो सकता है ।

जो व्यक्ति जागरूक बनना चाहता है उसे प्रतीक्षा करनी चाहिए कि "मैं जागृत जीवन व्यतीत करूँगा । आत्म-गौरव की रक्षा के लिए अपने हर एक कार्य को सफल और सुन्दर बनाने का प्रयत्न करूँगा । जीवन के बहुमूल्य क्षणों का अत्यन्त सावधानी के साथ सुव्यवस्थित ढंग से सदुपयोग करूँगा ।" यह प्रतिज्ञा जिह्वा के अग्रभाग से नहीं वरन् अन्तःकरण के गहनतम प्रदेश से की जानी चाहिए । लापरवाही से होने वाली भयंकर हानियों के ऊपर बहुत समय तक गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए, जिन लोगों के लापरवाही के कारण जीवन दुर्दशाग्रस्त हो रहे हैं उनकी दशा का सुविस्तृत चित्र कल्पना लोक में खींचना चाहिए और विचार करना चाहिए कि यदि उनमें यह दोष न रहा होता तो कितना आगे बढ़ गये होते । इसी प्रकार कुछ उन लोगों के जीवनों पर दृष्टिपात करना चाहिए जो साधारण-सी स्थिति के होते हुए भी अपने अध्यवसाय के कारण कितने आगे बढ़ गये । यदि उन उन्नतिशील व्यक्तियों ने इतनी सावधानी न बरती होती तो जो उनकी आरम्भिक दशा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थी, उससे भी गिरी दशा होती । ऐसी दशा में और उस गिरी दशा में कितना जमीन–आसमान का अन्तर होता ।

एक वे हैं जो लापरवाही के कारण ऊँचे से नीचे गिरे, दूसरे वे हैं जो जागरूकता के कारण नीचे से ऊँचे उठे हैं । इन दोनों प्रकार के मनुष्यों की आरम्भिक और अन्तिम अवस्था के अन्तर को ध्यानपूर्वक देखने से पता चलता है कि सावधानी में कितनी महानता और असावधानी में कितनी भयंकरता भरी हुई है । इस महानता और भयंकरता को एक–एक करके अपने जीवन से संबद्ध होने की कल्पना करनी चाहिए और मस्तिष्क में एक छाया चित्र बनाना चाहिए कि यदि भूतकाल में मैंने असावधानी न बरती होती तो अब तक कितना आगे बढ़ गया होता, तब आज कैसी उत्तम दशा रही होती । असावधानी के कारण कितने स्वर्ण सुयोग हाथ से निकल गये, समय और शक्ति की कितनी बर्बादी हुई, इस पर खेद पूर्ण पश्चात्ताप करना चाहिए । एक दूसरे कल्पना चित्र में यह सोचना चाहिए कि यदि भावी जीवन में सावधानी बरती जाय तो किस–किस दशा में कितनी–कितनी प्रगति हो सकती है ? और उस उन्नति युक्त दशा में अपनी स्थिति कितनी अच्छी एवं आनन्ददायक हो सकती है । इस प्रकार असावधानी से उत्पन्न होने वाली हानियों का भय और सावधानी से होने वालों लाभों का लोभ, अनेक उदाहरणों, तर्कों, प्रमाणों और कल्पनाओं के साथ मन के सामने रखने से भीतर से एक स्फुरणा उत्पन्न होती है । यदि वह स्फुरणा कायम रखी जा सके तो मनुष्य जागरूक बन सकता है ।

नियमबद्ध बनने की आवश्यकता

जीवन को जागृत बनाने के लिए दो बातों की प्रधान रूप से आवश्यकता है । एक तो समय का कार्य विभाजन, दूसरे अपने कार्यों में रुचि । प्रातःकाल चारपाई पर से उठते ही दिन भर का कार्यक्रम बना लेना चाहिए कि आज कौन कार्य किस समय करना है । उन कार्यों की विशेष आवश्यकता के अनुसार समय में हेर–फेर करना पड़े तो कोई बात नहीं, परन्तु अपनी निजी ढील के कारण जरा भी विलम्ब नहीं होना देना चाहिए । जिन्हें प्रातःकाल का नियत किया हुआ कार्यक्रम याद रखने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में अड़चन पड़ती हो तो उन्हें डायरी में नोट कर लेना चाहिए और रात को सोते समय देखें कि उस कार्यक्रम पर अमल हुआ या नहीं ? यदि नहीं हुआ तो उसका कारण अन्य परिस्थितियाँ थीं या अपनी ढील ? जहाँ अपनी ढील दिखाई पड़े वहाँ अपने को डाँटना चाहिए और आगे के लिए सावधानी रखने की दृढ़ता स्थापित करनी चाहिए ।

हर कार्य को अपने "गौरव की कसौटी" समझकर करना चाहिए । 'इस कार्य की श्रेष्ठता या निकृष्टता पर मेरा व्यक्तित्व परखा जाने वाला है' यह अनुभव करना चाहिए । जैसे कोई चित्रकला का विद्यार्थी चित्र बनाते समय यह ध्यान रखता है कि इस अभ्यास से तात्कालिक लाभ न सही पर अभ्यास हो जाने पर जब मैं सफलता के शिखर पर पहुँचूँगा तो वह लाभ बहुत बड़ा होगा । इस दृष्टिकोण से वह कड़ी मेहनत और एकाग्रता से काम करता है । वह जानता है कि शिक्षा काल की छोटी-मोटी रद्दी कागज पर, मामूली स्याही से बनने वाली तस्वीरों का स्वयं कुछ विशेष महत्व नहीं है, तो भी इन रद्दी कागज पर बड़े परिश्रमपूर्वक बनाये जाने वाले चित्रों के अन्तर्गत चित्रकला में महान सफलता का रहस्य निहित है । साधारण छोटे-मोटे दैनिक जीवन के कार्यों को जो मनुष्य अच्छे से अच्छा, सुन्दर से सुन्दर, बढ़िया से बढ़िया बनाने का प्रयत्न करना है, वह अपनी क्रिया शक्ति को सतेज करता है, अपने अभ्यास को बढ़ाता है । उन छोटे कामों में विशेष मनोयोगपूर्वक अधिक सुन्दरता उत्पन्न करना तत्काल कुछ विशेष महत्व भले ही न रखता हो पर उससे अभ्यास, सुरुचि को बनाने और बढ़िया काम करने की जो आदत पड़ती है वह अत्यंत ही मूल्यवान है ।

'यह बढ़िया काम किसने किया है ?' जब इस प्रश्न को प्रसन्न और सन्तुष्ट चेहरे से कोई पूछता हो तो समझ लीजिए कि उस काम के कर्त्ता के लिए सजीव उपहार भेंट किया जा रहा है । मनुष्य का गौरव इस बात में है कि उसके कामों की अच्छेपन, सुघड़ता और निर्दोषता के लिए प्रशंसा की जाय । जो व्यक्ति अपने काम को प्रशंसा योग्य बनाता है, वह काम उलट कर अपने करने वाले को प्रशंसा योग्य बनाता है । बहुत काम करना अच्छी बात है, पर उससे अच्छी बात यह है कि काम को उत्तमता से किया जाय । बहुत काम करना पर खराब करना यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई अच्छाई नहीं है, चाहे अपेक्षाकृत कुछ कम काम हो पर वह उत्तमता से किया हुआ होना चाहिए ।

चीजों को सँभाल कर यथास्थान रखना यह एक बड़ा अच्छा गुण है । इससे वस्तुएँ खोने, फूटने–टूटने या मैली–कुचैली होने से बच जाती हैं और वे अधिक समय तक अपनी मजबूती तथा सुन्दरता को कायम रखे रहती हैं । सौन्दर्य का प्रथम नियम चीजों का यथास्थान रखना है, नियत स्थान से भिन्न स्थान पर पड़ी हुई वस्तु ही कूड़ा–कचरा कही जाती है । प्रयोजन पूरा होने के उपरान्त वस्तुओं को जहाँ–तहाँ न पड़ी रहने देना चाहिए वरन् उन्हें यथास्थान रखने के बाद तब वहाँ से हटाना चाहिए । किसी काम की समाप्ति तब समझनी चाहिए जब उस कार्य में प्रयुक्त हुई वस्तु यथास्थान पहुँचा दी जाय ।

(१) इस कार्य में कोई भूल तो नहीं हो रही है ? (२) कार्य को और अच्छा किस प्रकार बनाया जा सकता है ? इन दोनों प्रश्नों को सदैव मन में जागृत रखने से ऐसे उपाय सूझ पड़ते हैं जिनके द्वारा अधिक लाभदायक, सन्तोषजनक और उन्नतिशील स्थिति प्राप्त हो सके । मैं जागृत तन्द्रा में तो नहीं जा रहा हूँ ? कोई लापरवाही तो नहीं बरत रहा हूँ ? आलस्य में बहुमूल्य समय तो नहीं गँवा रहा हूँ ? प्रमाद के लक्षण तो मुझमें नहीं आ रहे हैं ? इस प्रकार के प्रश्नों से अपनी शोधक दृष्टि को भरा रखना चाहिए और एक निष्पक्ष एवं खरे आलोचक की तरह अपने आप की परीक्षा तथा समीक्षा करते रहना चाहिए । जैसे मुँह पर कोई मक्खी या मच्छर आ बैठे तो उसे तुरन्त ही उड़ा देने के लिए हाथ उठता है, वैसे ही लापरवाही को मक्खी और आलस्य को मच्छर समझकर उन्हें पास न आने देना चाहिए और जैसे ही वे दिखाई दें वैसे ही तुरन्त उन्हें भगा देना चाहिए ।

अपना स्वभाव ढीला–पोला मत बनने दीजिए, अपने मन को उदास, निराश और गिरा हुआ मत रहने दीजिए । अपने आपको सदा चैतन्य, जागरूक और कर्तव्य परायण रखिए । जागृति में जीवन और तन्द्रा में मृत्यु है । आप जीवितों का जीवन जीना चाहते हैं तो जागृत रहिए अपने सब काम को सावधानी और सतर्कता के साथ कीजिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-रक्षा और नैतिकता

सावधानी और सुरक्षा का मुख्य उद्देश्य विरोधियों और दुष्ट प्रकृति के लोगों से आत्म-रक्षा और अन्य निर्बलों की रक्षा करना ही माना गया है । इस उद्देश्य से जो कार्य किए जाते हैं उनमें अनेकों बार विरोधाभास दिखलाई पड़ा करता है । जो कार्य कुटिल शत्रु के प्रयत्न को विफल करने के लिए आवश्यक होता है, वह अनेक बार अनैतिक जान पड़ता है और अनेक भोली प्रकृति के व्यक्ति ऐसे अवसर पर हिचकिचाकर कर्तव्यच्युत हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप उनको आपत्ति में फँस जाना पड़ता है । ऐसे लोग नैतिकता के वास्तविक स्वरूप से अनजान होते हैं । मनुष्य के कार्यों के भले या बुरे होने का निर्णय वास्तव में उसके उद्देश्य से किया जाता है । कार्यों के बाहरी स्वरूप से तो प्रायः धोखा हो जाता है, और लोग अच्छे कार्यों को भी निकृष्ट मान लेते हैं । सीधे-सीधे अवसरों पर तो सीधी-साधी प्रणाली से भली प्रकार काम चल जाता है । किसी भूखे-प्यासे की सहायता करनी है तो वह कार्य अन्न-जल दे देने से सीधे-सीधे तरीके से पूरा हो सकता है । इसी प्रकार किसी दुःखी या अभावग्रस्त को अभीष्ट वस्तुएँ देकर उसकी सेवा की जा सकती है । धर्मशाला, कुआँ, बाबड़ी, बगीचा, पाठशाला, गौशाला, अनाथालय, औषधालय, अन्न-छेत्र, सदावर्त, प्याऊ आदि के द्वारा लोक-सेवा की जाती है और यज्ञ, कथा, कीर्तन, सत्संग, उपदेश, सत्साहित्य आदि द्वारा जनहित किया जाता है । ऐसे कार्य निश्चय ही श्रेष्ठ हैं और उनकी आवश्यकता एवं उपयोगिता सर्वत्र स्वीकार की जाती है ।

पर कई बार इस प्रकार की सेवा की बड़ी आवश्यकता होती है जो प्रत्यक्ष में बुराई मालूम पड़ती है और उसके करने वाले को अपयश ओढ़ना पड़ता है । इस मार्ग को अपनाने का साहस किसी में नहीं होता, विरले ही बहादुर इस प्रकार की दुस्साहसपूर्ण सेवा करने को तैयार होते हैं । दुष्ट और अज्ञानियों को उस कुमार्ग से छुड़ाना-जिस पर कि वे बड़ी ममता और अहंकार के साथ प्रवृत्त हो रहे हैं-कोई साधारण काम नही है । सीधे आदमी सीधे तरीके से मान जाते हैं, उनकी भूल ज्ञान से, तर्क से, समझाने से सुधर जाती है, पर जिनकी मनोभूमि अज्ञानान्धकार से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कलुषित हो रही है और साथ ही जिनके पास कुछ शक्ति भी है वे ऐसे मदान्ध हो जाते हैं कि सीधी–सादी क्रिया–प्रणाली का उन पर प्रायः कुछ भी असर नहीं होता ।

मनुष्य शरीर धारण करने पर भी जिनमें पशुत्व की प्रबलता और प्रधानता है, ऐसे प्राणियों की कमी नहीं है । ऐसे प्राणी सज्जनता, साधुता और सात्विकता का कुछ भी मूल्यांकन नहीं करते । ज्ञान से, तर्क से, नम्रता से, सज्जनता से, सहनशीलता से उन्हें अनीति के दुःखदायी मार्ग पर से पीछे नहीं हटाया जा सकता । पशु समझाने से नहीं मानता । उससे कितनी ही प्रार्थना की जाय, शिक्षा दी जाय, उदारता बरती जाय, वह इससे कुछ भी प्रभावित न होगा और न अपनी कुचाल छोड़ेगा । पशु केवल दो चीजें पहचानता है । एक लोभ, दूसरा भय । दाना घास दिखाते हुए उसे ललचा कर कहीं भी ले जाइए वह आपके पीछे–पीछे चलेगा, या फिर लाठी का डर दिखाकर जिधर चाहें उधर ले जाया जा सकता है । भय या लोभ के द्वारा अज्ञानियों को, कुमार्गगामियों को, पशुओं को, कुमार्ग से विरत और सन्मार्ग में प्रवृत्त कराया जा सकता है ।

कुमार्गगामियों के सुधार का उपाय

भय उत्पन्न करने के लिए दण्ड का आश्रय लिया जाता है, लोभ के लिए कोई ऐसा आकर्षण उसके सामने उपस्थित करना पड़ता है जो उसके लिए आज की अपेक्षा भी अधिक सुखदायी प्रतीत हो । इसी प्रकार उसके सामने कोई ऐसा डर उपस्थित कर दिया जाय जिससे वह घबरा जाय और अपने ऊपर इतनी भयंकर विपत्ति आती हुई अनुभव करे जिसकी तुलना में अपनी वर्तमान कुटेवों को छोड़ना उसे लाभदायक मालूम पड़े तो वह उसे छोड़ सकता है । नशेबाजी, व्यभिचार आदि बुराइयों के दुष्परिणामों को बढ़ा–चढ़ा बताकर कई बार उस ओर चलने वालों को इतना डरा दिया जाता है कि वे उसे स्वयमेव छोड़ देते हैं । इस प्रकार के अत्युक्तिपूर्ण वर्णनों में यद्यपि असत्य का अंश रहता है पर वह इसलिए बुरा नहीं समझा जाता क्योंकि उसका प्रयोग सदुद्देश्य के लिए किया गया है । इसी प्रकार किन्हीं सत्कार्यों का लाभ अत्युक्तिपूर्ण रीति से बढ़ा–चढ़ा कर बताया जाय तो उसमें कुछ दोष नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता कारण कि बाल–बुद्धि लोगों को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने के लिए उस अत्युक्ति का आश्रय लिया गया है । गंगा–स्नान, तीर्थयात्रा, ब्रह्मचर्य, दान आदि के अत्युक्तिपूर्ण माहात्म्य हमारे धर्म–ग्रन्थों में भरे पड़े हैं । उन्हें असत्य ठहराने का साहस कोई विचारवान व्यक्ति नहीं कर सकता । क्योंकि आम जनता जिसमें बाल–बुद्धि की प्रधानता होती है, बिना विशेष भय और बिना विशेष लोभ के उच्चता के कष्टसाध्य मार्ग पर चलने के लिए कदापि सहमत नहीं हो सकती । स्वर्ग का आकर्षक आनन्ददायक वर्णन और नरक का भयंकर, रोमांचकारी, दुखदायी चित्रण इसी दृष्टि से किया गया है कि इस प्रबल लोभ या भय से प्रभावित होकर लोग अनीति का मार्ग छोड़कर नीति का मार्ग अपनावें । स्वर्ग–नरक की इतनी अलंकारिक कल्पनाएँ रचने वालों को क्या हम झूठा ठहरावें ? नहीं, यदि हम ऐसा करेंगे तो यह परले सिरे की मूर्खता होगी ।

संसार में अज्ञानग्रस्त, स्वार्थी, नीच मनोवृत्तियों वाले, बाल–बुद्धि लोगों की कमी नहीं है । इनकी सेवा उनकी इच्छाएँ पूर्ण करने में सहायक बनकर नहीं–वरन् बाधक बनकर ही की जा सकती हैं । जो बालक हर घड़ी गोदी में चढ़ना चाहता है, स्कूल जाने से जी चुराता है, पैसा चुराता है या और कोई कुटेव सीख रहा है उसके साथ उदारता बरतने, उसके कार्यों में सहायक होने का अर्थ तो उसके साथ शत्रुता करने का होगा, इस प्रकार तो वह बालक बिलकुल बिगड़ जायगा और उसका भविष्य अन्धकारमय हो जायगा । कोई रोगी है–कुपथ्य करना चाहता है, या सन्निपात ग्रस्त होकर अंड–बंड कार्य करने को कहता है, उसकी इच्छा पूर्ति करने का अर्थ होगा उसे अकाल मृत्यु के मुँह में धकेल देना । इस प्रकार के बालकों या रोगियों की सच्ची सेवा इसी में है कि वे जिस मार्ग पर आजकल चल रहे हैं, जो चाहते हैं उसमें बाधा उपस्थित की जाय, उनका मनोरथ पूरा न होने दिया जाय । इस कार्य में सीधे–साधे तरीके से ज्ञान और विवेकमय उपदेश देने से कई बार सफलता नहीं मिलती और उनके हित का ध्यान रखते हुए विवेकवान् ओर निस्वार्थ पुरुषों को भी असत्य या छल का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है । ऐसे असत्य या छल को निन्दित नहीं ठहराया जा सकता । रोगी या बालकों को फुसला कर उन्हें ठीक मार्ग पर रखने के लिए यदि झूँठ बोला जाय, डर या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोभ दिखाया जाय, किसी अत्युक्ति का प्रयोग किया जाय तो उसे निन्दनीय नहीं कहा जायगा ।

आसुरी शक्तियों से संघर्ष करने में छल का प्रयोग

आसुरी शक्तियाँ जब अत्यधिक प्रबल हो जाती हैं और उनको वश में करने के लिए सीधे–साधे तरीके असफल होते हैं तो काँटे निकालने की, "शठे शाठ्यं समाचरेत्" की नीति अपनानी पड़ती है । सिंह, व्याघ्र आदि का पकड़ना या मारना–सीधे–साधे तरीके से नहीं हो सकता, उनके सामने जाकर कुश्ती लड़ना या पकड़ लाना आदमी की शक्ति से बाहर है । जल में फँसाकर, छिपकर, बन्दूक आदि हथियार का आश्रय लेकर ही उन्हें पकड़ा या मारा जा सकता है । मोटी दृष्टि से देखने पर यह क्रियायें छल, धोखेबाजी, कायरतापूर्ण आक्रमण कही जा सकती हैं, पर विवेकवान् पुरुष जानते हैं कि इसमें कुछ भी अनीति नहीं है । हिंसक जन्तुओं की भयंकर करतूतें, उनको रोकने की अनिवार्य आवश्यकता एवं मनुष्य की अल्प शक्ति पर विचार करते हुए यह उचित प्रतीत होता है कि इन हिंसक जन्तुओं को जिस प्रकार से भी छल–बल से भी परास्त किया जा सकता हो तो वैसा भी निस्संकोच करना चाहिए ।

प्राचीन इतिहास पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो प्रतीत होता है कि इस नीति का अवलम्बन अनेक महापुरुषों को करना पड़ा है । धर्म की स्थूल मर्यादाओं का उल्लंघन करना पड़ा है । इस उल्लंघन में उन्होंने लोकहित का, धर्मवृद्धि का, अधर्म विनाश का ध्यान अपनी पूर्ण सद्भावना के साथ रखा था इसलिए उनको उस पाप का भागी नहीं बनना पड़ा जो साधारणतया धर्म मर्यादाओं के उल्लंघन करने पर होता है ।

भस्मासुर ने जब यह वरदान प्राप्त कर लिया कि मैं जिस किसी के सिर पर हाथ रख दूँ, वही भस्म हो जाय तो उसने महादेव जी को ही भस्म करने की ठानी ताकि सुन्दरी पार्वती को वह प्राप्त कर ले । भस्मासुर शंकर जी के सिर पर हाथ रखकर उन्हें भस्म करने के लिए उनके पीछे दौड़ा । शंकरजी अपने प्राण बचाकर भागे । विष्णु भगवान ने देखा कि यह भारी उलझन उत्पन्न हुई–असुर बलवान है, उसे परास्त करने के लिए छल का प्रयोग करना चाहिए । वे पार्वती का रूप बनाकर पहुँचे और कहा–

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असुरराज ! मैं आपको बड़ा प्रेम करती हूँ, पर एक बात मुझे शंकरजी की बहुत पसन्द है वह है उनका नृत्य । आप भी यदि वैसा ही नृत्य कर सकें तो मैं इसी क्षण से आपके साथ चलने का तैयार हूँ । भस्मासुर बड़ा प्रसन्न हुआ, वह पार्वती के साथ नृत्य करने लगा । नृत्य करते समय उसने अपना हाथ सिर पर रखा और स्वयं जलकर भस्म हो गया । विष्णु ने अपने छल-बल से उस प्रचण्ड असुर को सहज ही नष्ट कर दिया ।

समुद्र मंथन के बाद चौदह रत्न निकले । अन्य रत्न तो बँट गये पर अमृत के बँटवारे पर भारी झगड़ा था । देवता और असुर दोनों ही इस बात पर तुले हुए थे कि अमृत हमें मिलना चाहिए । विष्णु ने देखा कि ऐसे अवसरों पर छल का अचूक हथियार ही काम देता है । उन्होंने मोहिनी रूप बनाया, असुरों को लुभाया, अमृत बाँटने के लिए असुरों की ओर से प्रतिनिधि बने । देवताओं को सारा अमृत पिला दिया, असुर बगलें झाँकते रह गये । उन्होंने देखा कि हमारे साथ भारी विश्वासघात हुआ, पर मोहिनी रूप विष्णु का उद्देश्य तो महान था । असुरों के साथ छल और विश्वासघात करने का दोष उनको छू भी नहीं सकता था ।

राजा बलि को धोखे में डालने के लिए वामन का छोटा-सा रूप बनाकर साढ़े तीन कदम भूमि माँगना और भूमि नापते समय इतना विशाल शरीर बना लेना कि तीन कदम में ही सब कुछ नाप लिया गया और आधे कदम के लिए बलि को अपना शरीर देना पड़ा । इसे स्थूल दृष्टि वाले क्या कहेंगे ?

वृन्दा का सतीत्व नष्ट करने के लिए भगवान को जालंधर का रूप बनाकर जाना और उसका सतीत्व नष्ट करना, मोटे तौर से धर्म नहीं कहा जा सकता । फिर भी यह इसलिए उचित था क्योंकि जालंधर की मृत्यु ऐसा किए बिना नहीं हो सकती थी और जालंधर ऐसा दुष्ट था कि उसके जीवित रहने से असंख्य जनता पर विपत्ति के पहाड़ टूट रहे थे ।

राम ने वृक्ष की आड़ में छिपकर बालि को मारने में युद्ध के धर्म नियमों का स्पष्ट उल्लंघन किया । इसे क्या कहा जायगा ?

महाभारत में धर्मराज युधिष्ठिर ने अश्वत्थामा की मृत्यु का छलपूर्ण समर्थन किया । अर्जुन ने शिखण्डी की ओट में खड़े होकर भीष्म को मारा । कर्ण के रथ का पहिया गढ़ जाने पर भी उसका वध किया गया । घड़ से नीचे का भाग घायल करना वर्जित होने पर भी भीम द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्योधन की जंघा पर गदा प्रहार हुआ । क्या यह सब धर्मयुद्ध के लक्षण हैं ? पर यहाँ धर्म युद्ध के नियमों का अवसर ही कहाँ था ?

आपत्ति धर्म के अनुसार घोर दुर्भिक्ष पड़ने पर प्राण संकट में होने पर, अपने शरीर को लोकहित के लिए जीवित रखने की आवश्यकता अनुभव करते हुए–विश्वामित्र ऋषि, चाण्डाल के घर रात्रि में घुसकर कुत्ते का मांस चुराते हैं । चाण्डाल उन्हें पकड़ लेता है और चोरी करने के लिए ऋषि की भर्त्सना करता है । विश्वामित्र उसे सविस्तार समझाते हैं कि "मूर्ख ! तू धर्म को जितना स्थूल समझता है, वह उतना स्थूल नहीं है । किसी महान् उद्देश्य के लिए अधर्म करना भी धर्म ही है ।" इसी प्रकार एक बार अकाल पड़ने पर अपने लोकहितैषी जीवन की रक्षा के लिए उषस्ति ऋषि को किसी अंत्यज के झूठे उड़द खाकर अपने प्राण बचाने पड़े थे ।

प्रहलाद का पिता की आज्ञा का उल्लंघन करना, विभीषण का भाई को त्यागना, भरत का माता की भर्त्सना करना, बलि का गुरु शुक्राचार्य की आज्ञा न मानना, गोपियों का परपुरुष श्रीकृष्ण से प्रेम करना, मीरा का अपने पति को त्याग देना, लौकिक दृष्टि से धर्म की स्थूल मर्यादा के अनुसार यद्यपि अनुचित कहे जा सकते हैं, पर धर्म की सूक्ष्म दृष्टि से इसमें सब कुछ उचित ही हुआ है ।

हिन्दू धर्म के रक्षक छत्रपति शिवाजी द्वारा जिस प्रकार अफजलखाँ का वध किया गया, जिस प्रकार वे फलों की टोकरी में छिपकर बादशाह के बन्धन में से निकल भागे–उसे भी कोई मूढ़मति लोग छल कह सकते हैं । भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में क्रान्तिकारियों ने ब्रिटिश सरकार को उलटने के लिए जिस नीति को अपनाया था उसमें चोरी, डकैती, जासूसी, वेष बदलना, हत्या, कत्ल, झूठ बोलना, छल, विश्वासघात आदि ऐसे सभी कार्यों का उपयोग हुआ है जिन्हें मोटे तौर से अधर्म कहा जा सकता है । परन्तु विवेकवान व्यक्ति जानते हैं कि उनकी आत्मा कितनी पवित्र थी । अधर्म कहे जाने वाले कार्यों को निरन्तर करते रहने पर भी वे कितने बड़े धर्मात्मा थे । असंख्य दीन–दुखी प्रजा की करुणाजनक स्थिति से द्रवित होकर, अन्यायी शासकों को उलटने का उन्होंने निश्चय किया था । कानून की पोथियों ने भले ही उन्हें दोषी ठहराया और उन्हें कठोरतम दण्ड दिये, पर परमात्मा की दृष्टि में, धर्म के तत्वज्ञान की कसौटी पर वे कदापि पापी घोषित न किये जायेंगे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार की भावनाएँ कानून के विपरीत होते हुए भी सात्विक दृष्टि से हेय नहीं हैं । राजनीति के नेता, युद्ध के सैनिक, सरकार के गुप्त गृह विभाग के कर्मचारी इस तथ्य को अपनी विचारधारा का प्रधान अंग मानकर कार्य करते हैं । यदि वे सत्य और निष्कपटता की स्थूल परिभाषा के अनुसार अपना कार्य करने लगें तो उनका कार्य एक दिन भी चलना असम्भव है ।

इन सब बातों पर विचार करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारे अन्तःकरण में सत्य, प्रेम, न्याय, त्याग, उदारता, संयम, परमार्थ आदि की उच्च भावनाओं का होना आवश्यक है, उनकी जितनी अधिक मात्रा हो उतना ही उत्तम है । पर संसार के उन व्यक्तियों के साथ जो अभी अज्ञान या पाप के ज्वर से बेतरह पीड़ित हो रहे हैं, काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता है । उनकी आत्मा का कल्याण हो, वे अनीति से छूटें, इस भावना के साथ यदि उन्हें भय या लोभ से प्रभावित करके सन्मार्ग पर लाया जा सके तो उसमें डरने की कोई बात नहीं है । चोर, डाकू, जेबकट, भ्रष्टाचारी, दुरात्मा लोगों के भेद यदि छल करके मालूम कर लिए जायें और उन्हें पकड़वा दिया जाय तो इसमें बुराई की बात नहीं है । ऐसे अवसरों पर हमें अपनी धर्मभीरुता को लोकहित की तुलना में पीछे ही रखना चाहिए । शास्त्र के ऐसे कितने ही वचन हैं जिनमें कहा गया है कि–सदुद्देश्य के लिए प्रयुक्त हुआ असत्य–दुर्भाव के लिए प्रयोग हुए सत्य की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है । क्रिया की अपेक्षा भावना का ही महत्व अधिक है । यदि उच्च उद्देश्य से निन्दित कार्य भी किया जाय तो उससे भी लोकहित होता है और वह भी धर्म कार्य के समान ही पुण्यफल प्रदान करता है ।

पाप से सावधान रहो

मनुष्य का पतन शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के दोषों से होता है । हमको जिस प्रकार शारीरिक और व्यवहार संबंधी विषयों में सावधान रहने की आवश्यकता है, उसी प्रकार मानसिक दोषों से भी सतर्क रहने की आवश्यकता है । मानसिक दोष सूक्ष्म इन्द्रियों के विषय होने के कारण अधिक कठिनता से दूर किए जा सकते हैं । मानसिक दोष ही वास्तविक पाप हैं और उनसे प्रत्येक क्षण सावधान रहना–बचे रहना परमावश्यक है ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, असन्तोष, निर्दयता, असंयम, अभिमान, शोक,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्पृहा, ईर्ष्या और निन्दा–मनुष्य में रहने वाले ये बाहरी दोष, तनिक–सा अनुकूल अवसर पाते ही उत्तरोत्तर बढ़ने लगते हैं ।

मुनि सनत्सुजात के अनुसार "जैसे व्याघ्र मृगों को मारने का अवसर देखता हुआ उसकी टोह में लगा रहता है, उसी प्रकार इनमें से एक–एक दोष मनुष्यों का छिद्र देखकर उस पर आक्रमण करता है ।"

अपनी बहुत बड़ाई करने वाला, लोलुप, अहंकारी, क्रोधी, चञ्चल और आश्रितों की रक्षा न करने वाले–ये छः प्रकार के मनुष्य पापी हैं । महान संकट में पड़ने पर भी ये निडर होकर इन पाप कर्मों का आचरण करते हैं । सम्भोग में ही मन रखने वाला, विषमता रखने वाला, अत्यन्त भारी दान देकर पश्चात्ताप करने वाला, कृपण, काम की प्रशंसा करने वाला तथा स्त्रियों के द्वेषी–ये सात और पहले के छः ये तेरह प्रकार के मनुष्य नृशंस वर्ग के कहे गये हैं । सावधान रहें !

मनुष्य प्रायः तीन अंगों से पाप में प्रवृत्त होता है । १–शरीर, २–वाणी और ३–मन द्वारा । इनके भी विभिन्न रूप हो सकते हैं । विभिन्न अवस्थाएँ और स्तर हो सकते हैं । ये प्रत्येक मनुष्य का अधःपतन करने में समर्थ हैं । तीनों द्वार बन्द रखें–शरीर, मन और वाणी का उपयोग करते हुए बड़े सचेत रहें, कहीं ऐसा न हो कि आत्म संयम की शिथिलता आ जाये और पाप पथ पर चले जाँय ।

शरीर के पापों में वे समस्त दुष्कृत्य सम्मिलित हैं, जिन्हें रखने से ईश्वर के भव्य मन्दिर रूपी भवसागर से पार कराने वाले पवित्र मानव शरीर को भयंकर हानि पहुँचती है । कञ्चन तुल्य काया में विकार उपस्थित हो जाते हैं, जिससे जीवितावस्था में ही मनुष्य नर्क की यन्त्रणाएँ प्राप्त करता है ।

हिंसा प्रथम कायिक पाप है । आप सशक्त हैं तो हिंसा द्वारा अशक्त पर अनुचित दबाव डालकर पाप करते हैं । मद, ईर्ष्या, द्वेष, आदि की उत्तेजना में आकर निर्बलों को दबाना, मारपीट या हत्या करना जीवन को गहन अवसाद से भर लेना है । हिंसक की अन्तरात्मा मर जाती है । उसे उचित–अनुचित का विवेक नहीं रहता, उसकी मुख–मुद्रा से क्रोध, घृणा, द्वेष की अग्नि निकला करती है ।

चोरी करना कायिक पाप है । चोरी का अर्थ भी बड़ा व्यापक है । किसी के माल को हड़पना, डकैती, रिश्वत आदि तो स्थूल रूप में चोरी हैं ही, पूरा पैसा पाकर अपना कार्य पूरी दिलचस्पी से न करना भी चोरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का ही एक रूप है । किसी को धन, सहायता या वस्तु देने का आश्वासन देकर, बाद में सहायता प्रदान न करना भी चोरी का एक रूप है । फलतः ये कार्य अनिष्टकारी एवं त्याज्य हैं ।

व्यभिचार मानवता का सबसे घिनौना निकृष्टतम कायिक पाप है । जो व्यक्ति व्यभिचार जैसे निंद्य पाप–पंक में डूबते हैं, वे मानवता के लिए कलंक स्वरूप हैं । आये दिन समाज में इस पाप की शर्माने वाली गन्दी कहानियाँ और दुर्घटनायें सुनने में आती रहती हैं । यह ऐसा पाप है, जिसमें प्रवृत्त होने से हमारी आत्मा को महान दुःख होता है । मनुष्य आत्मग्लानि का रोगी बन जाता है, जिससे आत्महत्या तक की दुष्प्रवृत्ति उत्पन्न होती है । पारिवारिक सौख्य, बाल–बच्चों, पत्नी का पवित्र प्रेम, समृद्धि नष्ट हो जाती है । सर्वत्र एक काला अन्धकार मन वाणी और शरीर पर छा जाता है ।

आलस्य और प्रमाद से बचकर रहिए

सावधानी और सुरक्षा का एक बहुत बड़ा शत्रु आलस्य है। आलसी आदमी अपनी सफलता और सुरक्षा की व्यवस्था कभी भली प्रकार नहीं कर सकता, क्योंकि वह काहिली के स्वभाव की वजह से कार्य करने के उचित अवसर का उपयोग नहीं कर सकता और जीवन भर फिसड्डी बना रहता है । बदमाश और धूर्त लोग भी ऐसे ही ढीले–ढाले व्यक्ति को अपना शिकार बनाने की कोशिश किया करते हैं ।

आलसी व्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार की उत्कृष्टता प्राप्त करना कठिन है । कारण, वह अपनी शक्तियों को आलस्य की केंचुली में ढके रहता है । उद्योग तथा परिश्रम द्वारा उन्हें विकसित नहीं कर पाता । जब तक उद्योग नहीं, परिश्रम में प्रवृत्ति नहीं, तब तक शक्तियों का विकास नहीं हो सकता । आलस्य और उन्नति साथ–साथ नहीं चल सकते ।

आलस्य एक प्रकार का अन्धकार है, जो आत्मा पर, शक्तियों पर और मनुष्य की भावी उन्नति एवं प्रगति पर तुषारापात कर देता है । आलसी पड़ा–पड़ा यही सोचा करता है कि मेरा काम कोई अन्य व्यक्ति कर दे, मेरी तरक्की करा दे । बाजार से मेरे घर की नाना वस्तुएँ लादे, दफ्तर का काम भी अन्य कोई साथी ही कर दे । आलसी अफसर अपने छोटे मातहतों के वश में रहते हैं । वे जो पत्र या ड्राफ्ट लिख देते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, उसी पर हस्ताक्षर कर देते हैं । ठीक है या गलत, उचित है या अनुचित, क्या बातें लिख दी गई हैं यह भी नहीं देखते । बड़े–बड़े व्यापारियों के दिवाले प्रायः उनके हिसाब–किताब आय–व्यय का ठीक ब्यौरा न रखने के कारण निकलते हैं । वे उधार पर उधार दिये जाते हैं, पर उसे वसूल करने में आलस्य करते रहते हैं । रकमें उत्तरोत्तर बढ़ती जाती हैं और अन्त में सारी पूँजी उधार वालों में बँट जाती है । आलसी माता–पिता अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई उन्नति आदि को नहीं देखते । फलतः बच्चे उतनी उन्नति नहीं कर पाते जितना वस्तुतः उन्हें करना चाहिए । यदि वे अपना आलस्य छोड़कर उन पर एक तीखी दृष्टि रखा करें, स्वयं भी काम में सहयोग देते रहें, तो पर्याप्त प्रगति हो सकती है ।

प्रकृति को देखिए, उसका काम कैसा नियमबद्ध होता है । प्रत्येक वस्तु अपना–अपना निर्धारित कार्य निश्चित समय पर करती चलती है । आलस्य का नाम निशान तक नहीं । आलसी सदस्यों के प्रति प्रकृति बड़ी निष्ठुर है । आलसी की बड़ी दुर्गति होती है । अन्त में सजा के तौर पर वहाँ मृत्यु दण्ड तक का विधान है । प्रकृति का प्रत्येक सदस्य अन्त तक अपना काम सक्रियता से करता है ।

उद्योगी और परिश्रमी व्यक्ति ही आपको सुखी और समृद्ध दिखाई देंगे । मनुष्य का जन्म भले ही निर्धन परिवार में हो, उसके पास जाति श्रेष्ठता या घर की जमीन जायदाद कुछ भी न हो, केवल उद्योग और श्रम की आदतें हों, आलस्य से मुक्त हो, तो वह धनाढ्य और कीर्ति प्राप्त कर सकता है ।

कीर्ति और लक्ष्मी श्रम और उद्योग के आधीन हैं । जो आलस्य नामक शिथिल करने वाली और शक्तियों को पंगु बनाने वाली आलसी वृत्ति को छोड़ेगा, वह निश्चय ही यश प्रतिष्ठा और कीर्ति प्राप्त करेगा ।

संसार के इतिहास को उठा देखिए । वे जातियाँ नष्ट हो गईं, जो आलसी और विलासी बनीं । जिस जाति और समाज में आलस्य भर जाता है, वह यश, प्रतिष्ठा और नेतृत्व तीनों ही दिशाओं में अवनति के मार्ग पर अग्रसर होता जाता है । इंद्रिय–सुख, विलास और आलस्य उसको जर्जर तथा अशक्त कर देते हैं ।

जिस कठिन कार्य के करने लिए तबियत में आलस्य उत्पन्न हो, उसे जरूर किया कीजिए । मान लीजिए आप मन में यह अनुभव करते हैं कि अमुक व्यक्ति से मिलने जाना आवश्यक है, तो मन को मोड़कर जरूर यह काम कीजिए । जिन–जिन पत्रों का उत्तर लिखना है, अवश्य ही उनका उत्तर लिखिए । लिखने में आलस्य कभी न कीजिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आलस्य एक प्रकार की बुरी आदत मात्र है । मन, शरीर, दिमाग, वाचा–सभी प्रकार के आलस्य हमारी आदतों के परिणाम हैं । यदि माता–पिता आरम्भ से ही बच्चों में अनुशासन रखें और उनका मानसिक व शारीरिक कार्य सतर्कता से कराने की आदतें डालें तो आगामी पीढ़ी भी सुधर सकती है ।

बकवाद करना हानिकारक है

अनेक व्यक्तियों में आवश्यकता से अधिक बोलने अथवा जरूरत हो या न हो व्यर्थ की बातचीत करते रहने की आदत होती है । यह प्रवृत्ति सावधानी और सुरक्षा की दृष्टि से बड़ी हानिकर है । ऐसा व्यक्ति अपना कोई भेद कदाचित ही गुप्त रख सकता है । उसकी सभी योजनाएँ अथवा कार्यक्रम पहले से सबको विदित हो जाते हैं और अगर किसी विरोधी की इच्छा हो तो वह उसे सहज में ही परास्त कर सकता है । इसके सिवा इस प्रकार की आदत होने से मनुष्य के मुँह से अनेक अप्रिय बातें भी निकल जाती हैं, जिनका परिणाम अशुभ होता है ।

बकवाद करने की तीन बुराइयाँ प्रत्यक्ष हैं । एक, मानसिक शक्ति खर्च होती है, दूसरे आत्म–निरीक्षण का अभाव होता है तीसरे भलाई न करके बुराई ही अधिक हो जाती है । इन तीनों बातों को निरन्तर घटाना आवश्यक है । जब तक हम किसी प्रकार की आदत के बुरे परिणाम को ठीक से मन में नहीं बैठा लेते, वह आदत नहीं छूटती । उसे छुड़ाने के लिए अपने अचेतन मन में परिवर्तन करना आवश्यक है ।

जिस बात का लक्ष्य, क्रम और समय निश्चित हो वह बकवाद नहीं है, पर जब हम साधारणतः समाज में आते हैं, तब न तो हमारे बात–चीत करने का कोई लक्ष्य होता है, न उसके विभिन्न पहलुओं का कोई क्रम होता है ओर न कोई समय की अवधि होती है । ऐसी अवस्था में मानसिक शक्ति का संचय नियम के पालन से होता है ।

मनुष्य–जन्म सर्वश्रेष्ठ माना गया है । इसमें आदमी जितनी भौतिक और आत्मिक उन्नति कर सकता है उतनी और किसी योनि में संभव नही । पर यह तभी संभव हो सकता है, जबकि मनुष्य सदैव सावधान और सतर्क रहे । जागरूक व्यक्ति ही अवसर से लाभ उठाकर अग्रसर हो सकता है और विघ्न–बाधाओं से अपनी रक्षा कर सकता है । असावधान, बेखबर, आलसी, लापरवाह व्यक्ति कभी उन्नति नहीं कर सकते । इसलिए उन्नति की कामना रखने वाले समझदार व्यक्ति का कर्तव्य है कि सदैव सावधान रहे । ⊙

मुद्रक–युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org